CHAPTER 32

MUSIC & FINE ARTS

Doctoral Theses

01. ALISH MOHAN
Research on Characteristics of Sound in Acoustic, Electronics & Digital Domain its Practical use in Modern Music Production.
Supervisor: Prof. Shailender Kumar Goswami
Th 27643

Abstract

The most Basic form of Sound is "Acoustic Sound" that is the result of Vibrations propagating through Air or other mediums. These vibrations strike our eardrums and we can hear that sound. Acoustics is the science that studies how sound is made, travels, and is heard in the real world. This study includes things like frequency, loudness etc and how sound waves behave in different environments. Studying acoustics helps in designing studios. In the electronic domain, sound is represented as continuous electrical signals that directly correspond to the original sound waves. When a sound is captured, such as by a microphone, the vibrations of air pressure are converted into an electrical signal that mirrors the shape and frequency of the original sound wave. Electronic sound retains the smooth, uninterrupted nature of the original audio, preserving the full range of frequencies and details. Studying Electronic domain helps in Preserving Audio Quality and understanding Historical and Technological Relevance. The study of Digital domains came into existence with the rise of computer and digital technology. Whereas analogue sound which is continuous, digital sound is stored in the form of binary data, which allows users to manipulate the sound waves and create music with great accuracy. Sound is converted from analogue to digital form using processes like ADC (analog-to-digital conversion) which is easy to store, edit and share. Nowadays, digital sound has become the most widely used format, particularly in music production and distribution, because of its versatility and software manipulation potential. Digital technologies DAWs (Digital Audio Workstations) MIDI (Musical Instrument Digital Interface) etc, have greatly changed how we access and enjoy sound.

Contents

1. Introduction 2. Understanding Sound in Acoustic Domain 3. Sound in Electronic Domain 4. Understanding Sound in Digital Domain 5. Practical use & Career opportunity in modern music Production.

02. अमृता रानी
भारत रत्न भूपेन हजारिका का संगीत में योगदान ।
निर्देशिका: डॉ. (श्रीमती) दीप्ति बंसल
Th 27649

सारांश

भारत रत्न डॉ. भूपेन हजारिका की जीवन यात्रा और उनके महान व्यक्तित्व के विविध पक्षों पर उनकी विलक्षण तथा बहुमुखी प्रतिभा के विविध आयामों का चित्रण इस शोध यात्रा के माध्यम से जानने एवं समझने का प्रयास किया है डॉ. भूपेन हजारिका के जन्म, बाल्यावस्था, शिक्षा उनके सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन की उपलब्धियां, बाल्यकाल में प्राप्त संगीत के श्रेष्ठ परिवेश आदि के विवरण को पांच अध्यायों में पिरो कर रेखांकित किया गया है 1 इस शोध की भूमिका के पश्चात उल्लेखित पांच अध्यायों में से प्रथम अध्याय में डॉ. भूपेन हजारिका के व्यक्तित्व में मैंने उनके प्रारंभिक जीवन के विभिन्न बिंदुओं के माध्यम से जन्म ,बाल्यकाल और उनके परिवेश तथा प्राथमिक शिक्षा आदि का उल्लेख किया है| अगले बिंदु में भूपेन दा की पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में बताते हुए उनकी मां शांतिप्रिय, पिता नीलकांत हजारिका तथा उनकी मौसी द्वारा उनके संगीत में अभिरुचि को विकसित करने में दिए गए योगदान का उल्लेख किया गया है | इसके तीसरे भाग में बालक भूपेन की संगीत में बढ़ती रुचि ,उनके कविता लिखने और गाने में बढ़ते रुझान , ज्योति प्रसाद अग्रवाल और विष्णु राभा जैसे श्रेष्ठ गुरुओं का प्रवेश और उनकी संगीत शिक्षा का शुभारंभ तथा संगीत के प्रति बढ़े सकारात्मक दृष्टिकोण का उल्लेख किया है| इसके चतुर्थ भाग में बालक भूपेन का फिल्मी संगीत जगत में प्रवेश और एचएमवी जैसी बड़ी कंपनी द्वारा विशिष्ट सम्मान का उल्लेख है| इसके पंचम बिंदु में भूपेन हजारिका द्वारा संगीतबद्ध फिल्म संगीत का जनचेतना पर प्रभाव और शास्त्रीय संगीत और लोकजीवन की सहज अभिव्यक्ति का उल्लेख है| शोध के द्वितीय अध्याय में भूपेन हजारिका द्वारा संगीतबद्ध रचनाओं के साहित्यिक पक्ष ,उनकी प्रमुख साहित्यिक एवं संगीतबद्ध रचनाओं का साहित्यिक विश्लेषण है | तृतीय अध्याय पूरब के लोक संगीत में हिंदी चित्रपट के चितेरे का भारतीय फ़िल्म संगीत निर्माण में योगदान , बांग्ला फिल्मों में संगीत निर्देशन के साथ-साथ भूपेन दा के समकालीन गीतकारों एवं निर्देशकों का उल्लेख किया है| चतुर्थ अध्याय के माध्यम से मैंने डॉ. भूपेन हजारिका के कलात्मक अवदान , विभिन्न संस्थाओं में उनके योगदान के साथ-साथ संगीत निर्देशन में विविध वाद्यों के प्रयोग का उल्लेख है साथ ही इस अध्याय में श्री जितेन हजारिका, श्री रंजन कुमार दत्ता, श्री कमल कोटकी, श्री समर हजारिका, श्री आलेख चक्रवर्ती के साथ साक्षात्कार का उल्लेख किया है| इसी अध्याय में भूपेन के गीत संगीत में सहयोगी गायक गायिकाओं के उल्लेख , संस्कृति संवाहक के रूप में भूपेन दा के साहित्यिक अवदान का उल्लेख किया है| इस शोध प्रबंध के पांचवें और अंतिम अध्याय में मैंने उनके व्यक्तिगत जीवन संघर्ष और सोपान के माध्यम से उनके जीवन में महिलाओं की उपस्थिति उनके अनूठे प्रेम प्रसंग, उनको मिले सम्मान एवं उपाधियों के साथ उनके संपूर्ण विशिष्ट सृजन का उल्लेख किया है| इस अध्याय में उनकी अंतिम यात्रा और भारत रत्न बनाए जाने तक की यात्रा का प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है 1

विषय सूची

1. डॉ. भूपेन हजारिका का व्यक्तित्व 2. डॉ. भूपेन हजारिका द्वारासंगीतबद्ध रचनाओं का साहित्यिक पक्ष 3. पूरब के लोक संगीत से हिन्दी चित्रपठ के चितेरे (सृजनकार) 4. डॉ. भूपेन हजारिका का कलात्मक योगदान 5. डॉ. भूपेन हजारिका का व्यक्तित्वप जीवन संघर्ष एवं सोपान। उपसंहार। संदर्भ - ग्रंथ सूची। परिशिष्ट।

03. आशुतोष

अजराड़ा घराने की बंदिशों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

निर्देशक : डॉ. राजपाल सिंह एवं प्रो. (श्रीमति) अनुपम महाजन

Th 27650

सारांश

इस शोध प्रबंध के अंतर्गत शोधार्थी ने अजराड़ा घराने की उतपत्ति, विकास, वादनविधि, बंदिशें, तथा इस घराने के कलाकारों के संदर्भ में जानकारी प्रदान की है| शोधार्थी ने अपने शोध प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया है| जिसके अंतर्गत शोधार्थी ने प्रथम अध्याय में अजराड़ा घराने की उत्पत्ति के सन्दर्भ में दो मतों का उल्लेख किया है जिसमें एक मत बहुत प्रसिद्ध तथा सभी कलाकारों तथा लेखक-लेखिकाओं द्वारा माना जाता है वहीँ दूसरे मत को कुछ लोग ही सही मानते है| शोधार्थी ने इस अध्याय में दो मतों का उल्लेख कर उनकी समीक्षा की है जिसके अंतर्गत शोधार्थी ने अपने खुद के विचार भी साझा किये है| इसके अतिरिक्त शोधार्थी ने

अजराड़ा गाँव जाकर वहाँ के लोगों से भी वार्तालाप कर इस घराने के सन्दर्भ में जानकारी एकत्रित की। दूसरे अध्याय में शोधार्थी ने अजराड़ा घराने की वादन विशेषताओं के सन्दर्भ में जानकारी प्रदान की है तथा अजराड़ा घराने में बजने वाली विभिन्न विस्तारशील बंदिशों का भी उल्लेख किया है। विस्तारशील बंदिशों के अंतर्गत शोधार्थी ने पेशकार, कायदा, रेला, तथा रौ के सन्दर्भ में जानकारी प्रदान की है तथा उदाहरण के लिए शोधार्थी ने अजराड़ा घराने की बंदिशों को भी लिपिबद्ध रूप में लिखा है। तीसरे अध्याय में शोधार्थी ने अजराड़ा घराने की अविस्तारशील बंदिशों के सन्दर्भ में जानकारी प्रदान की है जिसके अंतर्गत शोधार्थी ने विभिन्न अविस्तारशील बंदिशों जैसे- मुखड़ा या मोहरा, टुकड़ा, गत , तथा चक्रदार की व्यख्या कर उदाहरण के लिए अजराड़ा घराने की बंदिशें भी लिखी है। चौथे अध्याय में शोधार्थी ने विभिन्न प्रकार की ताल जैसे- तीनताल, झपताल, रूपक, और एकताल में अजराड़ा घराने की बंदिशों के सन्दर्भ में जानकारी प्रदान की है तथा अजराड़ा घराने की विभिन्न बंदिशों को लिखा। पाँचवे अध्याय में शोधार्थी ने अजराड़ा घराने के कुछ महान कलाकारों के जीवन परिचय का उल्लेख कर अपने शोध प्रबंध को समाप्त किया है।

विषय सूची

1. अजराड़ा घराना – एक परिचय 2. अजराड़ा घराने की वादन विधि एवं विस्ताशील बंदिशें 3.अजराड़ा घराने की अविस्तारशील बंदिशें 4. विभिन्न तालों में अजराड़ा घराने की बंदिशें 5. अजराड़ा घराने के कलाकारों का परिचय । उपसंहार। संदर्भ – ग्रंथ सूची।

04. BHARADWAJ (Arkaja)
A Comparative Study between the Borgeet Ragas of Assam and Ecclesiastical Modes of Western music in Medieval Period.
Supervisors: Dr. Surendra Nath Soren and Prof. Anupam Mahajan
Th 27644

Abstract

This research study, titled “A Comparative Study between the Borgeet Ragas of Assam and Ecclesiastical Modes of Western music in Medieval Period” involve two concepts. It aims to understand the phenomena by discovering and measuring melodic structure of Eight specific Borgeet Ragas with medieval religious melodies based on Eight Modes. Thus, the researcher has reviewed these two subjects with analytical comparison to establish a link between them. The basic conceptualization of the study is based on the theoretical understanding that gives some statement for analyzing hypothetical situations to establish a decision on the topic. In the first chapter of this study, the concept of Borgeet has been described in detail with its characteristics, numbers and classification, theme, Geographical factors in the creation of Borgeet, observation from previous research on Borgeet, instrument accompanied with this religious song, specific ragas and taals applied with the Borgeet etc. In the Second chapter, the structures of Borgeet are explained along with their lyrics, the meaning of those lyrics, mainly notation of ragas in aalap format compositions divided into; viz. Dhrung and Pada. Initially, due to the oral form under ‘Guru – Shishya’ tradition, the Sattriya music including Borgeet, Angkiya Geet etc have been followed into different perspective by the disciples and devotees of Srimanta Sankardeva. Therefore, the details of eight Borgeet Ragas have been describedin this chapter and also, the structural difference between Some Common Name Ragas of Hindustani Music and Borgeet Ragas. The third chapter explores the concept of Ecclesiastical Modes in Western music which developed around the 9th to 16th century A.D for grouping and categorizing Gregorian chant (Plain Song). The religious songs, called Gregorian chants were established by Pope Gregory I for monastic institution like Church and eight modes had been collected from different regions. Through this chapter definition, characteristics of Modes with its classifications, description of eight particular modes,

later developed six modes which were a similar version of previous eight modes. Lastly, in the fourth chapter, the comparative analysis has been given between eight Borgeet ragas and Ecclesiastical modes with explaining the interval difference in the basic scales of both the melodies which follows with Conclusion and Bibliography.

Contents

1. Introduction 2. Chapter 1 3. Chapter 2 4. Chapter 3 5. Chapter 4 5. Conclusion 6. Bibliography.

05. चौहान (सौरभ)
तराना, त्रिवट एवं चतुरंग: ग्वालियर घराने के विशेष संदर्भ में।
निर्देशक : प्रो. अनन्या कुमार डे
Th 27651

सारांश

इस शोध प्रबंध के अंतर्गत तराना, त्रिवट एवं चतुरंग गायन प्राणकारो का विश्लेषण किया गया है एवम ग्वालियर घराने के कलाकारों का इन गायन शैलियों के प्रचार प्रसार में योगदान के विषय में बताया गया है।

विषय सूची

1. प्रबंध एवं उसका विकास 2. ख्याल गायन के घराने एवं ग्वालियर घराना 3. तराना गायन विधा का उद्भव एवं विकास 4. चतुरंग का ऐतिहासिक विकास एवं शास्त्राधार 5. त्रिवट गायन विधा का उद्भव एवं विकास 6. ग्वालियर घराने में गाए जाने वाले तराना, त्रिवट व चतुरंग की स्वरलिपियॉं । उपसंहार। । चित्र वीथि। संदर्भ – ग्रंथ सूची।

06. CHOWDHARY (Aindrila Dutta)
The Significance of Music in the Storytelling Art Forms of the Manasa Cult of Bengal.
Supervisor: Prof. Ananya Kumar Dey
Th 27645

Abstract

As part of the primitive animism of Indian religion, the fear of snakes resulted in great numbers and numerous varieties of serpent cults all over India. In Bengal, Manasa, a female folk snake goddess is widely worshipped, and around her various rituals as well as performances are practiced. As a ritual of Manasa Puja, several traditional musical performances are performed all over Bengal throughout the year, especially during the monsoons, and each performance is inspired by the story of Manasa Mangal Kavya of the Medieval period. Based on fieldwork and archival documents and divided into four chapters, the introductory part of the thesis mentions the explanation of the title of this investigation, previous works that have been done so far on this particular topic, the objective of the research, chapter summary, methodology, limitations, and location of the research, respectively. The first chapter gives a general overview of the origin and evolution of the Manasa worshipping tradition of Bengal in the Indian subcontinent. The next chapter portrays a detailed description of the various folk musical performance traditions developed around this goddess in this region. The third chapter or the analytical part of the paper defines the theories of Geomusicology as well as Ecomusicology and regionalizes the songs of Manasa performances by examining their lyrics and tunes

and this chapter also explores the patterns of diffusion in the Manasa musical traditions in terms of instrumentations, genres, and performative styles. The final chapter defines the bi-chronic analysis of the evolution of the Manasa narrative performance in this region. In addition, collected from the fieldwork, this research is also a collection of the transcription, translation, and notation of numerous songs of Manasa Pala performances.

Contents

1.Introduction 2. The Manasa Cult of Bengal: A Study of its Rituals and Performances 3. Music and Traditional Performances on Manasa Narratives: Structure and Performative Styles 4. Regionalization: Change and Diversity in Manasa Performances 5. Manasa Narrative Performances: the Interface between Tradition and Modernity. Conclusion, Appendices and Bibliography.

07. दुबे (नकुल कुमार)

पंडित डी.के. दातार का सांगीतिक योगदान।

निर्देशिका: प्रो. अलका नागपाल

Th 27652

सारांश

हिन्दुस्तानी संगीत में विभिन्न वॉयलिन वादक हुए हैं परन्तु इस शोध कार्य में पं. डी.के. दातार के सम्पूर्ण जीवन काल, वादन शैली व सांगीतिक योगदान के बारे में विस्तार से बताया गया है। सर्वप्रथम वॉयलिन के ऐतिहासिक पक्ष पर प्रकाश डाला है जिसके अंतर्गत भारतीय विद्वानों तथा पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार वॉयलिन की उत्पत्ति, निर्माण, हिन्दुस्तानी संगीत में प्रयोग का वर्णन किया गया है। इसके पश्चात् पं. डी.के. दातार के संघर्षमय बाल्यकाल, शिक्षा तथा परिवार से संबंधित सभी तथ्यों को बताया गया है। सबसे महत्वपूर्ण पक्ष पं. डी. के. दातार की वादन शैली के बारे में विस्तार से बताया गया है। उनकी वादन शैली की क्या विशेषताएँ थी, उन सभी तथ्यों का उल्लेख किया है। पं. डी. के. दातार के जीवन काल में उन्हें विभिन्न स्वरूपात्मक किरदारों से गुजरना पड़ा, चाहे वह वादक, संगतकार, शिक्षक, संगीत प्रचारक आदि सभी पहलुओं को इस शोध कार्य में बताया है। पं. डी.के. दातार ने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में वॉयलिन को एक विशेष स्थान तक पहुँचाया है साथ ही चित्रपट संगीत तथा विभिन्न शिष्यों को भी तैयार किया था. देश विदेश में विभिन्न प्रस्तुतियाँ, विद्वानों की दृष्टि में कुशल वॉयलिन वादक होने तक का सफर, सांगीतिक सम्मान आदि सभी का वर्णन शोध कार्य में विभिन्न तथ्यों के आधार पर किया गया है।

विषय सूची

वॉयलिन का इतिहास 2. पं. डी. के. दातार का बाल्यकाल एवं प्ररंभिक शिक्षा 3. पं डी. के. वादन शैली और प्रमुख विशेषताएँ 4. पं. डी. के. दातार का फिल्म जगत से संबंध एवं शिष्य परंपरा 5. प्रस्तुति, पुरस्कार, सम्मान, एवं अंतिम प्रयाण । उपसंहार। संदर्भ - ग्रंथ सूची।

08. गुप्ता (ऐलिस)

उत्तर प्रदेश के विश्वविद्यालयों में संगीत की स्थिति: एक समालोचनात्मक अध्ययन।

निर्देशक : प्रो. जगबंधु प्रसाद एवं अनुपम महाजन

Th 27898

सारांश

संगीत शिक्षा और उत्तर प्रदेश के विश्वविद्यालय: एक समालोचनात्मक अध्ययन संगीत भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो मनोरंजन के साथ-साथ आध्यात्मिक, सामाजिक, और व्यक्तिगत विकास का

माध्यम भी है। उत्तर प्रदेश, भारतीय संगीत की समृद्ध परंपराओं का केंद्र, कई घरानों और लोक संगीत शैलियों के लिए प्रसिद्ध है। ठुमरी, दादरा, कजरी जैसे लोकगीत और कथक नृत्य शैली राज्य की सांस्कृतिक पहचान हैं। इस सांगीतिक विरासत ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। उत्तर प्रदेश में संगीत शिक्षा का एक लंबा इतिहास है, जो गुरु-शिष्य परंपरा से शुरू होकर आधुनिक संस्थागत शिक्षा तक विकसित हुआ है। आज, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के तहत, शिक्षा को बहु-विषयक और लचीला बनाया जा रहा है। संगीत शिक्षा में सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान का संतुलन छात्रों के समग्र विकास को बढ़ावा देता है। हालांकि, उत्तर प्रदेश के विश्वविद्यालयों में संगीत शिक्षा के क्षेत्र में कई चुनौतियाँ हैं। संसाधनों की कमी, गुणवत्तापूर्ण वाद्ययंत्र और अभ्यास कक्षों की अनुपलब्धता प्रमुख समस्याएँ हैं। शिक्षकों की संख्या, स्थायित्व और प्रशिक्षण में भी सुधार की आवश्यकता है। पुस्तकालयों में सामग्री की उपलब्धता और गुरु-शिष्य परंपरा के साथ आधुनिक शिक्षा प्रणाली का समन्वय आवश्यक है। यह शोध कार्य उत्तर प्रदेश के विश्वविद्यालयों में संगीत शिक्षा की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करता है। इसमें पाठ्यक्रम, शिक्षण पद्धतियाँ, और छात्रों की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन किया गया है। इसका उद्देश्य समस्याओं की पहचान कर समाधान प्रस्तुत करना है। संगीत शिक्षा का उन्नयन राज्य की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने और इसे वैश्विक पहचान दिलाने में सहायक होगा।

विषय सूची

1. उत्तर प्रदेश की संस्कृति एवं परंपरा 2. संगीत और शिक्षा 3. केंद्रीय विश्वविद्यालयों में संगीत की स्थिति 4. राज्य विश्वविद्यालयों में संगीत 5. सम एवं निजी विश्वविद्यालयों में संगीत । उपसंहार। परिशिष्ट। संदर्भ ग्रंथ सूची।

09. खरे (आस्था)

सन् 1990 से वर्तमान समय तक हिंदी सिनेमा में दक्षिण भारतीय वाद्यों का प्रयोग - एक विश्लेषणात्मक अध्यय।

निर्देशक : प्रो. पी. बी. कन्ना कुमार

Th 27897

सारांश

सिनेमा चाहे मूक हो अथवा बोलता हुआ, वाद्यों का स्थान हमेशा से अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना गया है।मूक फ़िल्मों के दौर में स्क्रीन के बगल वाद्यों को रख कर उस दृश्य के भावों के अनुसार राग अथवा धुन बजाया जाता था तथा पहली बोलती "फ़िल्म में हारमोनियम, तबला, वॉयलिन आदि वाद्यों का प्रयोग किया गया था।" (भारतीय फिल्म-संगीत में ताल समन्वय, डॉ. इन्दु शर्मा `सौरभ`, पृ.सं.-21) सिनेमा की जड़ `नाटक` है तथा नाटक में वाद्य अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखते थे। नाटक में वाद्यों का प्रयोग व महत्त्व के विषय में प्रथम अध्याय में विस्तृत चर्चा हुई है है इसलिए इस अध्याय में सिनेमा में वाद्यों के महत्त्व के विषय में चर्चा करेंगे। सर्वप्रथम इस बात पर प्रकाश डालना आवश्यक है की हिन्दी सिनेमा के लिए वाद्यों का प्रयोग कितना महत्त्व रखता है। हालाँकि हिंदी सिनेमा में साधारणतः उत्तर भारतीय वाद्यों का ही प्रयोग विशेष रूप से होता था परंतु कभी कभी पुरानी फ़िल्मों में भी कहीं कहीं दक्षिणी वाद्यों का प्रयोग कर गीतों को नवीन रस दिया गया है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय व लोक वाद्यों के साथ दक्षिण भारतीय शास्त्रीय व लोक वाद्यों व का भी बख़ूबी प्रयोग किया जाने लगा जैसे- सन् 1968 की हिट फ़िल्म 'पड़ोसन' के गीत 'एक चतुर नार' में मृदंगम प्रयोग का किया गया है। यह गीत अपने इस दक्षिण भारतीय तत्व के कारण लोगों को खूब पसंद आया। सन् 1972 की फ़िल्म 'पाकीज़ा' के ही गीत 'मौसम है आशिक़ाना' में शास्त्रीय वाद्यों के अतिरिक्त दक्षिण भारतीय वाद्य मॉर्सिंग का प्रयोग सुनाई देता है

विषय सूची

1. संगीत का परिचय व इतिहास : हिन्दी सिनेमा के सन्दर्भ में 2. विभिन्न कालखण्ड में वाद्यों का महत्व 3. हिन्दी सिनेमा में प्रयुक्त दक्षिण भारतीय वाद्यों का विवरण 4. सन् 1990 से वर्तमान समय तक हिन्दी सिनेमा में दक्षिण भारतीय वाद्यों का प्रयोग करने वाले प्रमुख संगीत निर्देशक 5. सन् 1990 से वर्तमान समय तक हिन्दी सिनेमा में दक्षिण भारतीय वाद्य युक्त गीतों का विवरण। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

10. महतोलिया (अलंकार)

हिंदुस्तानी रागों में अंतःसम्बन्ध के विविध आधार : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।

निर्देशिका : प्रो. अलका नागपाल एवं प्रो. (श्रीमति) अनुपम महाजन

Th 27899

सारांश

राग भारतीय संगीत की मौलिक एवं अति महत्वपूर्ण कल्पना है जिसे भारतीय संगीत के परिवेश में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है | स्व-अनुभवों एवं मनोवैज्ञानिक आधार पर आचार्यों ने विभिन्न राग हेतु अलग-अलग संगीत संबंधी मान्यताएँ प्रचलित की, वह मान्यताएँ प्राचीनकाल से वर्तमान समय तक भारतीय संगीत के वाग्मय में पर्याप्त रूप से व्याप्त एवं प्रतिष्ठित हैं | भारतीय संगीत का सार राग के चरित्र को प्रस्तुत करने और बनाए रखने में निहित है। सदियों पहले बने राग आज भी नए और ताज़े लगते हैं। इस नवीनता की भावना का कारण यह है कि रागों में विविधताओं की अनंत गुंजाइश होती है। विविधताएँ मन की सौंदर्यात्मक प्रशंसा की क्षमता के माध्यम से अलंकरण और अनुभव की मदद से बनाई जाती हैं। मन संबद्ध रागों के बीच अंतर के सूक्ष्म बिंदुओं को देख सकता है, उनमें अंतर कर सकता है और उनकी सराहना कर सकता है। राग की पहचान स्थापित करने वाली बुनियादी घटनाएँ राग में प्रयुक्त स्वर के उच्चारण पर निर्भर करती हैं। जिस विशेष तरीके से स्वर प्रस्तुत किया जाता है (उच्चारण किया जाता है) वह राग को उसका रूप देता है और इस तरह उसे तुरंत पहचानने योग्य बनाता है। यह प्रस्तुति न केवल उसकी पहचान स्थापित करती है बल्कि उसे अक्षुण्ण भी रखती है ताकि वह दूसरे रागों से प्रभावित न हो और समान/समान सुर वाले दूसरे रागों के साथ न मिल जाए। इस प्रकार प्रत्येक प्रस्तुति कुछ नियमों का पालन करती है।

विषय सूची

1. राग - अवधारणा, उद्भव एवं विकास 2. राग मूल तत्व 3. स्वरों की प्रकृति एवं स्वरूपविधान के आधार पर रागों का विश्लेषण 4. स्वर प्रयोग एवं स्वर उच्चार के आधार पर रागों का अध्ययन 5. आंशिक समानताओं के आधार पर रागों का विश्लेषण । उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

11. सरकार (उदिति)

हिंदुस्तानी संगीत में नट अंग के रागों का विश्लेषणात्मक अद्ध्ययन।

निर्देशक: प्रो. ओजेश प्रताप सिंह

Th 27655

सारांश

उत्तर भारतीय अथवा हिंदुस्तानी संगीत के अन्तर्गत छोटे-छोटे राग परिचायक स्वर संगतियों अथवा स्वरावलियों को रागांग कहा जाता है। यह एक विलक्षण विशेषता हैं कि इस पद्धति के अन्तर्गत विभिन्न रागांगो अर्थात् राग परिचायक विशिष्ट स्वर समूहों के विशिष्ट प्रयोग द्वारा इन रागांगो के मिश्रण के आधार पर अनेक नव राग रूपों की रचना हुई जिन्हें मूल राग का प्रकार अथवा भेद कहा गया। ऐतिहासिक दृष्टि से देखने पर मध्यकालीन ग्रंथों में राग भेद की अवधारणा स्पष्टतया दिखाई देती है किंतु आधुनिक रागांग पद्धति के प्रवर्तक पंडित नारायण मोरेश्वर खरे को माना जाता है, जिन्होंने छब्बीस मुख्य रागांगों के अन्तर्गत रागों को वर्गीकृत करने का विचार

प्रस्तुत किया। इन्हीं रागांगों में से एक रागांग हैं- नट रागांग,जिसके प्रयोग के आधार पर अनेक भावपूर्ण एवं रंजक रागों की रचना हुई। जैसे - नट-भैरव, छायानट, नट-बिहाग, नट-कामोद आदि। ऐसे ही अनेक नट रागांग के प्राचीन एवं नवनिर्मित रागों का अध्ययन एवं विश्लेषण इस शोध प्रबंध का मुख्य उद्देश्य है।अध्ययन में सुविधा की दृष्टि से इस शोध कार्य को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है जिसमें प्रथम दो अध्यायों के अंतर्गत राग एवं रागांग तथा नट रागांग पर विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। तदोपरांत, इस शोध प्रबंध के तीन अध्यायों में नट अंग के प्रचलित प्रकार, जैसे - नट-भैरव, छायानट, नट-बिहाग आदि, अल्प्रचलित प्रकार जैसे सार-नट, भूप-नट, सावनी-नट आदि तथा अप्रचलित प्रकार, जैसे - नट-बिलावल, हमीर-नट, सारंग-नट आदि रागों का, विभिन्न मंचीय कलाकारों के साक्षात्कार के आधार पर एवं पुस्तकों के गहन अध्ययन से, विश्लेषणात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है तथा बंदिशों के माध्यम से इनके प्रयोगात्मक स्वरूप को स्पष्ट किया गया है।

विषय सूची

1. रागांग राग वर्गीकरण 2. राग नट स्वरूप एवं रागांग 3. नट अंग के प्रचलित राग 4. नट अंग के अल्प प्रचलित राग 5. नट अंग के अप्रचलित राग। उपसंहार। संदर्भ – ग्रंथ सूची। परिशिष्ट।

12. SHARMA (Kongbrailatpam Tamashwor)
Basak Songs og Manipuri Nat Sankirtan: An In-Depth Study.
Supervisor: Prof. Ananya Kumar Dey
Th 27647

Abstract

The Basak Kirtan, a significant manifestation of Nata Sankirtan in the Manipuri Gaudiya Sampradaya, holds deep cultural and spiritual importance. Despite its significance, the historical origins of Basak Kirtan remain obscured by a lack of comprehensive literature. This study endeavors to uncover the emergence of Basak Kirtan, attributing its development to Guru Chingakham Swarupananda during Maharaj Bhagyachandra`s reign. Historical challenges impede the tracing of Basak Kirtan`s origin, with Sanskrit treatises from Maharaj Gambhir Singh`s era hinting at Nayika Bhet discussions, indicating its existence during that period. Discrepancies in Swarupananda`s surname add complexity to the historical narrative, though his role in creating Basak and composing `Bhangi Pareng Achouba` is acknowledged. Divergent perspectives from Cheitharol Kumbaba and other sources challenge the belief that Basak Kirtan originated during Maharaj Bhagyachandra`s era. The study explores evidence proposing Maharaj Churachand`s reign as the introduction period in the Manipuri language, despite the existence of Padavali songs earlier. Delving into the reigns of Maharaj Narasingh and Maharaj Chandrakirti, the study suggests the possibility of Basak Kirtan`s origin between these periods, with "Govinda-Sangeet-Lila-Vilash" indicating Rasak as a precursor. Categorized as Rasa-Kirtan, Basak Kirtan revolves around Radha-Krishna`s love story, portraying emotions through the Ashta Nayika. The singing style, influenced by Manipuri traditional folk songs and Vaishnav poets, adds uniqueness. Two Basak types, Nayitik and Nayimitik, are identified, with Nayimitik reserved for specific occasions. The study emphasizes Basak Kirtan`s cultural and spiritual significance, exploring its composition, types, and improvisation. It addresses challenges in tracing its origins. Transitioning to the contemporary era, the study examines the historical transformation, noting shifts in language, performers, and settings. Modern challenges, including reduced audience participation, solo performances, and potential commercialization, prompt concerns about preservation. The study underscores the importance of archival documentation for safeguarding Basak Kirtan`s authenticity and passing it to future generations.

Contents

1. Introduction 2. Origin of Sankirtan 3. Basak Kirtan 4. Components Of Basak Kirtan 5. Musical Instruments of Basak Kirtan 6. Ragas, Taals, Compositions and Rasas in Basak Kirtan.Conclusion and Bibliography.

13. शर्मा (ऋचा)

रस सिद्धांत की पारंपरिक अवधारणा एवम् आधुनिक रागदारी संगीत (गायन के विशेष संधर्भ में)।

निर्देशक : प्रो. अनन्या कुमार डे

Th 27654

सारांश

भारतवर्ष में` रस परंपरा ` प्राचीन काल से चली आ रही है। जहां रस सिद्धांत की स्थापना व प्रतिष्ठा का श्रेय नाट्यशास्त्र ग्रंथ के रचियता भरत मुनि को जाता है।जिन्होंने नाट्य के संदर्भ में रस सिद्धान्त का सुविस्तार पूर्वक वर्णन किया है।इसमें अभिनय तथा रंगमंच के माध्यम से रस के स्वरूप , उसकी निष्पत्ति, एवम अनुभूति के विषय में सामग्री प्राप्त होती है । भरतोपरांत `रस सिद्धांत` की अवधारणा को लेकर समयानुसार विद्वानों की विचारधारा परिवर्तित होती चली गई । आज यह नाट्य से हटकर संगीत में स्वतंत्र शाखा के रूप में विकसित हुआ है। प्रोफेसर प्रेमलता शर्मा जी ने आज की स्थिति में मधुर ,औजस व प्रसाद गुणों के आधार पर संगीत के प्रभाव का निरूपण करने को सुविधाजनक बताया। इन तीनों की चरम अवस्था रस यानी `आनंद ही है। इन गुणों के द्वारा श्रोता के हृदय में विशुद्ध रस निष्पत्ति होती है।आज के आधुनिक रागदारी संगीत रस की प्रासंगिकता को विभिन्न गायन शैली के कलाकारों के विचारों द्वारा जानने का प्रयास किया गया है ।जिनके अनुसार कला का एक व्यापार है जिसमें भाव एवं रस का आदान प्रदान हो है भाव है तभी रस है ।कलाकार सामाजिक जीवन में रस ग्रहण करता है इस आनंद के आस्वाद को वह दूसरो को भी परिचित कराता है जिससे रस चक्र की प्रक्रिया प्रारंभ होती है । वह समाज से प्राप्त भावों को अपनी कठिन तपस्या व साधना रूपी अग्नि में पकाता है ।जिसके फलस्वरुप कलाकृति का निर्माण होता है ।इसका संप्रेषण वह श्रोता के समक्ष करता है । परिणामतः श्रोता में भी उसी रस की निष्पत्ति होती है व तादात्मय स्थापित होता है जिसका आस्वाद स्वयं कलाकार ने किया होता है।जिससे श्रोता को भी आनंद मिलता है।

विषय सूची

1. रस की परम्परा एवं ग्रंथों द्वारा प्रतिपाद्य रस सिद्धान्त 2. राग का ऐतिहासिक विवरण 3. राग व रस संबंधी विभिन्न विद्वानों के मत तथा काकु भेद 4. रस निष्पत्ति में सहायक महत्वपूर्ण तत्व : विभिन्न गायन विधाओं के संदर्भ में 5. लय, ताल एवं संगत वाद्यों द्वारा गायन में रस निष्पत्ति । उपसंहार। संदर्भ – ग्रंथ सूची। परिशिष्ट।

14. WANI (AEJAZ AHMED)

Role of Instruments in Kashmiri Sufiyana Mousiqui.

Supervisors: Prof. Alka Nagpal and Prof. Anupam Mahajan

Th 27896

Abstract

This research discusses the various aspects of the evolution and progress of Sufiyana mosiqui and its Musical instruments in Kashmir Valley. The roles of various dimensions of the mosiqui have been explored including the origin of the Sufi philosophy and its links with Sufiyana mosiqui's spiritual foundations, the poetic expressions, and the musical instruments in use. The history of Kashmir Valley and the rulers who contributed to the promotion of music in the valley has also been studied and discussed in the research. It is interesting to note the interconnection of all these dimensions in bringing about the massive impact which Sufiyana mosiqui has not

only in Kashmir but all over the country and nearby regions. The culture and history of Kashmir has played a role in the development of music and the Sufi saints who made Kashmir their abode immensely contributed in making the music linked to the creator, God and overall provided it a spiritual sound.

Contents

1. Introduction 2. Historical background of Kashmir Geographically and culturally 3. Sufiyana Mousiqi Of Kashmir 4. Importance Of Gharana In Kashmiri Sufiyana Mousiqi 5 Role Of String Instruments In Kashmiri Sufiyana Mousiqi. 6. Role of percussion instruments in Kashmiri Sufiyana mousiqi 7. Changing Trends Of Instruments In The Sufiyana Mousiqi With Special Reference To Role Of Instruments. Conclusion, Annexure and Bibliography.

15. YADAV (Ajay)
Study of the Changing Visual Language of Classical Photography Due to Emergence of Mobile Phone Photography.
Supervisor: Prof. (Dr.) B. S. Chauhan
Th 27648

Abstract

Photography has grown considerably in a very short period of time. Over the last 200 years, cameras evolved from a simple box that recorded hazy photos to advanced DSLRs and today`s smartphone cameras. Mobile devices have transformed the photographic environment. Variables such as ease of use, portability, connectivity, accessibility, and comparative cost effectiveness contribute to an increased awareness of the manner in which photographs can be employed to communicate and express oneself in everyday situations, establishing the mobile camera as the ideal and preferred medium for photographing personal or collective experiences. Nowadays, practically everyone has a phone with a camera that is always ready. The democratic character of photography is the outcome of this. The diversity and themes of photographs have substantially grown. People photograph anything and everything around them, including meals, dogs, flowers, and roadways. (Eating, seeing friends, taking the bus, etc.) The current study`s objective is to examine how smartphone photos has affected society. It explores shifting photographic philosophies, emerging photographic patterns, and the psychological effects of mobile photos in India. It is intended to study the impact of mobile photography on classical photography and, more significantly, look at how traditional photography`s aesthetics and rules have changed as a result of the widespread use of mobile photography. The aim of this research is to reestablish photography`s status as both an art and medium of communication, and it shall encourage the development of the photographic aesthetics by attempting to draw a distinct line between snapshot and professional photography.

Contents

1. Journey of Photography 2. Mobile Phone Photography; Changing Language of Photography 3. Research Methodology 4. Research Finding 5. Conclusion and Recommendation. Bibliography and Appendix.